समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ फरवरी २०२४ ● वर्ष : २७ ● अंक : ८ (निरंतर अंक : ३२०) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

भगवत्पाद साँईं
श्री लीलाशाहजी महाराज
का प्राकट्य दिवस
पढ़ें पृष्ठ ७

४
अप्रैल

गुरु-ज्ञान और रंग
पलाश का होली पर बरसे ।
उस होली की चाह-चाह में
जन-जन है तरसे ।।

होली पर्व

२४ व २५ मार्च पढ़ें पृष्ठ ३

मेडिकल ग्राउंड व मानवता के आधार पर आशारामजी बापू को बेल मिलनी ही चाहिए

१७

- कीर्ति आहूजा, अधिवक्ता, उच्चतम अदालत

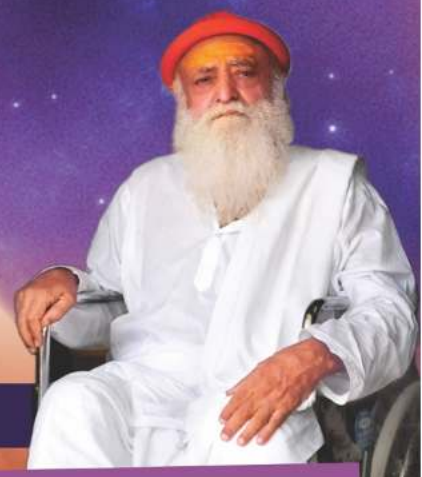

संत-समाज व समाजसेवी संगठनों द्वारा की जा रही
पूज्य बापूजी की रिहाई की माँग

स्वास्थ्य की गम्भीरता देखते हुए उपचार के लिए दी जाय राहत

मलूक पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी : संत आशारामजी बापू अस्वस्थ हैं और उनकी ८६ वर्ष की आयु है तो उन्हें यातना न देकर के उनकी रिहाई होनी चाहिए।

तपस्वी छावनी पीठाधीश्वर जगद्गुरु परमहंस आचार्य : न्यायपालिका को उपचार के लिए तो सुनना चाहिए। मैं न्यायपालिका से निवेदन करूँगा कि वह न्याय करे।

स्वामी श्री आनंद स्वरूप, अध्यक्ष, शंकराचार्य ट्रस्ट : निर्दोष संत आशारामजी बापू को न्याय मिलना चाहिए। उन्हें तत्काल रिहा करना चाहिए।

आचार्य श्री कौशिकजी महाराज : इस समय पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। सच्चा केस नहीं है तो भी वे जमानत पर बाहर नहीं आ पा रहे हैं तो इसके पीछे भी कुछ गड़बड़ी-सी दिखती है।

श्री सत्येन्द्रदास वेदांतीजी, अयोध्या : पूज्य बापूजी का अस्पताल का दृश्य तथा उनकी स्थिति को देखकर मुझे बड़ी पीड़ा हुई कि ऐसे महापुरुष के साथ ऐसा अन्याय हो रहा है कि जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। आज इलाज के लिए भी उनको कोई राहत नहीं दी जा रही है !

श्री दिवाकराचार्यजी महाराज, अयोध्या : आशारामजी बापू एक ऐसे संत हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया, पूरी दुनिया को भगवान श्रीरामजी के आदर्शों पर चलने का मार्ग प्रशस्त किया है, उन्हें अस्वस्थता की अवस्था में भी ठीक से उपचार की सुविधा नहीं दी जा रही है। उन्हें कम-से-कम इलाज के लिए तो बेल दी जानी चाहिए।

साध्वी यशोदा दीदी, वैदेही संस्कार धाम : बापूजी जैसे कोई संत नहीं, **न भूतो न भविष्यति**। बापूजी सुरक्षित रहे तो हमारा धर्म भी सुरक्षित रहेगा। संत-समाज की ओर से मैं सरकार से यही कहना चाहती हूँ कि बापूजी का स्वास्थ्य जल्दी-से-जल्दी ठीक हो ऐसी सुविधा, व्यवस्था उन्हें प्रदान की जानी चाहिए।

श्री अशोक रावल, क्षेत्र मंत्री, विश्व हिन्दू परिषद, गुजरात : ८६ वर्षीय परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की तबीयत बहुत खराब और चिंताजनक है। उनके हृदय की ३ धमनियों (arteries) में (९९%, ९०%, ८०-८५%) ब्लॉकेज हैं। ऐसी गम्भीर परिस्थिति में बीमारी और उम्र के अनुकूल उपचार त्वरित उपलब्ध करवाना अत्यंत आवश्यक है।

श्री विक्रमसिंह राठौड़, राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू युवा वाहिनी : हमारे देश में तो आतंकवादियों के भी मानव-अधिकारों का ध्यान रखा जाता है। उनके लिए देश का सर्वोच्च न्यायालय आधी रात में भी खुल जाता है। राम मंदिर की कार सेवा से लौट रहे रामभक्तों को गोधरा में जिंदा जलानेवालों को भी जमानत दी गयी है तो फिर देश के एक हिन्दू संत के साथ इतना अन्याय क्यों ?

श्री अवधेशजी गुप्त, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, गौ-रक्षा विभाग, विहिप : झूठे केस में फँसाये गये राष्ट्रसंत आशाराम बापूजी के स्वास्थ्य का ग्राफ दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है लेकिन उन्हें कोई राहत नहीं दी जा रही है। इससे जनमानस में बड़ा आक्रोश व्याप्त है। बापूजी की रिहाई होनी चाहिए।

प्रेम-प्रकाश फैलाने और बुराइयों को जलाने का पर्व

सत्य ईश्वर है। जो ईश्वर की ओर चलता है उसको विपदाएँ, आपदाएँ, तपन आये परंतु विश्वास और दृढ़ता से ईश्वर की ओर चलता रहे तो जैसे वरदान पायी हुई होलिका जल मरती है और प्रह्लाद बच जाता है ऐसे ही भक्त ईश्वरप्राप्ति के मार्ग में आनेवाले विघ्नों को पैरों तले रौंदते हुए अपनी मंजिल - आत्मपद पर आरूढ़ हो जाता है।

---

२४ व २५ मार्च को होलिकोत्सव है। इस पर्व की महत्ता के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

होलिकोत्सव का उद्देश्य

होलिकोत्सव आनंद-उल्लास का उत्सव है। बड़े-से-बड़ा तीसमारखाँ और छोटा गरीब व्यक्ति - दोनों के एकत्व का, मुक्त मन करने का उत्सव होलिकोत्सव है। मन के ऊपर जो शिष्टाचार, नियम और अनुशासन के नियंत्रण थे उनसे मुक्त-मन होने का दिन है होली।

होली अर्थात् हो... ली... जो हो गया सो हो गया, भूल जायें। गाँव के लोग होली मना रहे थे। इसमें रोहित और मोहन एक-दूसरे से लड़े हुए थे, होली के समय तो सबने लकड़ियाँ इकट्ठी कीं। अब होली होनेवाली है, जलाना है। किसीने कहा कि भई ! होली का मतलब समझो, अपनी बुराइयाँ जलाने का संकल्प ही होली है और दूसरा, जो मनमुटाव हो गया उसे भूल जाओ... होली सो

होली के पवित्र पर्व का विकृतीकरण

शराब व हानिकारक रंगों के विक्रय में तेजी

दिल्ली सरकार के आबकारी विभाग (excise department) ने खुलासा किया कि वर्ष २०२३ में होलिका दहन के दिन राज्य में शराब की २६ लाख बोतलें बिकीं। पश्चिम बंगाल में २०२२ में इस दिन से लेकर उसके बाद के ३ दिनों तक शराब की २०० करोड़ रुपये की बिक्री हुई।

भारतीय संस्कृति का पवित्र पर्व है होली, जिसके निमित्त हमारे ऋषि-मुनियों ने हृदय में आत्मिक आनंद-उल्लास उभारने व स्वास्थ्य-लाभ पाने की सुंदर व्यवस्था की है।

आज जहाँ पर्वों के सूक्ष्म रहस्य को जाननेवाले संतों-महापुरुषों के सत्संगी, अनुयायी इस ऋषि-प्रदत्त परम्परा का लाभ उठा के उन्नत हो रहे हैं वहीं संतजनों के सद्ज्ञान से विमुख भोगी लोगों द्वारा, स्वार्थी तत्त्वों द्वारा इस पर्व में कई विकृतियाँ पैदा की गयी हैं, जो समाज के स्वास्थ्य व चरित्र के लिए घातक सिद्ध हो रही हैं।

दिल्ली में १ दिन में हुई शराब की २६ लाख बोतलों की बिक्री

दिल्ली सरकार के आबकारी विभाग (excise department) ने खुलासा किया कि वर्ष २०२३ में होलिका दहन के दिन राज्य में शराब की २६ लाख बोतलें बिकीं। पश्चिम बंगाल में २०२२ में इस दिन से लेकर उसके बाद के ३ दिनों तक शराब की

चहुँओर उठ रही
बापूजी की रिहाई की आवाज

जगमोहन शास्त्रीजी, राधामाधव मुक्तिबोध आश्रम (हि.प्र.) : २५ दिसम्बर को तुलसी पूजन दिवस और १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस किसने शुरू करवाया ? संत श्री आशारामजी बापू ने।

षड्यंत्रों के तहत विधर्मियों ने बापूजी को कहाँ पहुँचा दिया ! हम-आप सब सोये हुए हैं, कुछ पता ही नहीं है। याद रखना जो दिखाया जाता है वही सच नहीं होता है।

अनुजजी महाराज, कथा प्रवक्ता : बापूजी बिल्कुल निर्दोष हैं फिर भी उनको अभी तक कोई राहत नहीं दी गयी !

डॉ. राकेशदास, विश्व हिन्दू परिषद, हनुमानगढ़, अयोध्या : संत आशारामजी बापू एक सिद्ध संत हैं। उनके साथ साजिश हुई है। सरकार बापूजी को ससम्मान रिहा करे।

महेन्द्रगिरि पीठाधीश्वर दंडीस्वामी श्री भास्करतीर्थ महाराज ने कहा : ''आज हमारे संत अपमानित हो रहे हैं। पता नहीं इस दुष्ट संसार में ऐसा कैसे होता है कि लोकहितकारी निर्दोष संतों को ही जेल में भेज देते हैं ! यह हिन्दू धर्म का अपमान है। इससे देश का अहित हो रहा है। देश का हित तो तब होगा जब बापूजी जैसे संत रिहा होंगे। बापूजी की शीघ्रातिशीघ्र रिहाई होनी चाहिए।''

(संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता)

कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा है

संस्कृत

: शोध

नासा के वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स द्वारा १९८५ में प्रकाशित हुए शोधपत्र में संस्कृत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता की टेक्नोलॉजी हेतु उपयुक्त बताया गया। इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर्स, अमेरिका द्वारा २०१६ में प्रकाशित किये गये शोध से सामने आया कि 'सभी प्राकृतिक भाषाओं में संस्कृत कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा है।'

विदेशियों का बढ़ रहा है संस्कृत के प्रति रुझान

अपनी वैज्ञानिकता एवं उत्कृष्ट व्याकरण के कारण संस्कृत भाषा की लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इसकी महत्ता को समझते हुए आज ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (यू.के.), सिडनी विश्वविद्यालय (ऑस्ट्रेलिया), नरोपा विश्वविद्यालय (यू.एस.ए.) आदि विश्व के कई प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थानों में इसे पढ़ाया जा रहा है।

वर्ष २०२३ में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के गंगानाथ झा परिसर (जि. प्रयागराज, उ.प्र.) द्वारा संस्कृत के ऑनलाइन कोर्स की शुरुआत की गयी, जिसके लिए भारत के अलावा अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, चीन, जर्मनी, इंडोनेशिया, कनाडा, यू.के., नेपाल, रूस आदि २५ से अधिक देशों से आवेदन-पत्र आये। ८ हजार से अधिक की संख्या में आये पत्रों में से ६०% पत्र विदेशी लोगों व विदेशों में रहनेवाले भारतीय मूल के नागरिकों की

तीर्थ से

आत्मतीर्थ की ओर...

तीर्थ में दूसरे का अन्न नहीं खाना चाहिए, नहीं तो पुण्य उसके हवाले हो जाता है। दूसरे के धन से पुण्यस्थान की यात्रा नहीं करनी चाहिए, अपने तन, मन, धन आदि से करो। ऐसे स्थल में रहकर थोड़ी शुद्धि हुई है तो फिर अशुद्ध आहार, अशुद्ध दर्शन, अशुद्ध विचार, अशुद्ध कर्म से परहेज करें।

(पिछले अंक में हमने तीर्थ की महिमा व उसके प्रकारों के बारे में पढ़ा, अब आगे का शेष)

पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है : ''तीर्थों में आजकल कैसे-कैसे लोग घुस गये हैं, मैं खूब अनुभव करके बैठा हूँ। अब तो तुम अपने घर में, गाँव में, अपने हृदय में ही तीर्थ बना लो। कभी-कभार तीर्थ में जाओ सावधान होकर तो हम सहमत हैं, हमारी मना नहीं है परंतु आत्मतीर्थ में आना है।

पहले के जमाने में तीर्थों में इसीलिए जाया जाता था कि घर की तू-तू, मैं-मैं से दूर हो वहाँ के खुले वातावरण का लाभ मिलता था और वहाँ स्नान करके एकांत में रहनेवाले साधु-संतों, महापुरुषों का सत्संग-मार्गदर्शन मिल जाता, दीक्षा मिल जाती थी। अब वहाँ ऐसे सद्गुरुओं को खोजना बड़ा कठिन हो गया है क्योंकि उन महापुरुषों का लिबास पहनकर बहुत सारे आपराधिक, दगाबाज लोग भी घुस गये इसलिए सद्गुरुओं की खोज तीर्थों में नहीं, सच्चे हृदय से करो फिर हो सकता है तीर्थ में मिल जायें अथवा जहाँ मिलें वह भूमि तीर्थ है।

तीर्थयात्रा का उद्देश्य क्या ?

जो घर-कुटुम्ब में ममता में रहते हैं वे यदि तीर्थयात्रा में आये तो उन्हें पुरानी ममता से थोड़ा

अमृततुल्य गोदुग्ध के अनुपम लाभ

तीर्थ में दूसरे का अन्न नहीं खाना चाहिए, नहीं तो पुण्य उसके हवाले हो जाता है। दूसरे के धन से पुण्यस्थान की यात्रा नहीं करनी चाहिए, अपने तन, मन, धन आदि से करो। ऐसे स्थल में रहकर थोड़ी शुद्धि हुई है तो फिर अशुद्ध आहार, अशुद्ध दर्शन, अशुद्ध विचार, अशुद्ध कर्म से परहेज करें।

भारतीय नस्ल की गाय के दूध को क्यों कहा गया है अमृत ? क्या कारण है कि चिकित्सक इसे सभी आयु-वर्ग के लोगों के लिए पौष्टिक भोजन के रूप में तथा विभिन्न रोगों से रक्षा के लिए सेवन करने का सुझाव देते हैं ? स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन व तेजस्वी बुद्धि के लिए क्यों आवश्यक माना जाता है यह दूध ? क्यों यह माँ के दूध के बाद बच्चों के लिए सबसे प्रशस्त माना गया है ? इस दूध की कुछ विशेषताएँ :

(१) इसमें ऐसे अनुपम गुण होते हैं कि इसे खाद्य पदार्थों में उत्तम माना जाता है। खाद्य पदार्थों को पचाने में जितनी ऊर्जा व्यय होती है उससे कम ऊर्जा इसे पचाने में व्यय होती है। इसे शरीर की सभी धातुओं की वृद्धि करनेवाला मधुर रस भी कहा गया है।

(२) यह आहारमात्र नहीं है, आयुर्वेद में इसे प्रकृति-प्रदत्त रसायन (टॉनिक) माना गया है जो दुर्बल तथा रोगियों को नवजीवन प्रदान करता है।

(३) यह पोषक तत्त्वों से भरपूर व सात्त्विक होने से माँ के दूध के बाद बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त माना गया है। बालकों के शरीर को अच्छी तरह पोषित करता है और उन्हें तंदुरुस्त बनाता है।

तुलसी बीज गोली

✻ रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक ✻ भूख बढ़ाने में सहायक ✻ कृमिनाशक ✻ शुक्र धातु वर्धक ✻ आँतों में संचित मल को निकालने में लाभदायी ✻ हृदय के लिए बलप्रद ✻ त्वचा के वर्ण को निखारने में सहायक

पुदीना अर्क

यह पाचक, रुचिकारक, भूखवर्धक, स्फूर्तिदायक व चित्त को प्रसन्न करनेवाला है। पेट के विकारों, जैसे - अरुचि, भूख न लगना, अजीर्ण, अफरा (gas), उलटी, दस्त, हैजा एवं कृमि में यह विशेष उपयोगी है। बुखार, खाँसी, सर्दी-जुकाम, मूत्राल्पता तथा श्वास व त्वचा-रोगों में भी लाभदायी है।

होमियो पॉवर केअर

देशी गाय के पवित्र पीयूष से निर्मित

इन गोलियों में हैं ऐसे पोषक तत्त्व, जो देते हैं आपके शरीर के हर हिस्से को उचित पोषण, उत्तम स्वास्थ्य और ढेर सारी ऊर्जा !

शुद्ध घी

✻ जठराग्नि व वीर्य वर्धक तथा रुचिकर ✻ हृदय एवं आँखों के लिए लाभकारी ✻ दीर्घायुदायक तथा स्मृति व मेधा शक्ति, लावण्य, कांति वर्धक ✻ चिंता व तनाव निवारक ✻ हड्डियाँ व स्नायु बनाये सशक्त ✻ अलक्ष्मी को दूर कर लक्ष्मीप्रदायक ✻ सुंदरतावर्धक ✻ कैंसर प्रतिरोधक ✻ बालों को बनाये घना, मुलायम व लम्बा ✻ दाह, पित्त आदि गर्मी-संबंधी समस्याओं में हितकर

निरापद वटी

यह संक्रमण का नाश कर तद्जन्य बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी आदि लक्षणों से शीघ्र राहत दिलाती है।

आँवला-अदरक शरबत

यह यकृत (liver) व आँतों की कार्यक्षमता, चेहरे की कांति, रोगप्रतिकारक शक्ति (immunity) व भूख बढ़ाता है। इससे पाचन ठीक से होता है एवं शरीर पुष्ट व बलवान बनता है। यह अरुचि, अम्लपित्त (hyperacidity), पेट फूलना, कब्ज आदि अनेक तकलीफों में एवं हृदय, मस्तिष्क व बालों हेतु लाभदायी है।

देशी गाय के घी, आँवला व अनेक जड़ी-बूटियों से निर्मित

च्यवनप्राश

स्पेशल च्यवनप्राश

केसर, मकरध्वज व चाँदी युक्त

✻ स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक ✻ रोगप्रतिकारक शक्ति, नेत्रज्योति व स्फूर्ति वर्धक ✻ हृदय व मस्तिष्क पोषक ✻ फेफड़ों के लिए बलप्रद ✻ ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक ✻ हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत ✻ क्षयरोग में तथा शुक्रधातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी ✻ वात-पित्तजन्य विकारों में तथा दुर्बल व्यक्तियों हेतु विशेष हितकर

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

मातृ-पितृ पूजन दिवस पर बही निर्दोष प्रेम की रसधारा

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

मालाएँ व पूज्य बापूजी द्वारा स्पर्शित प्रसाद पाते लोक कल्याण सेतु के कर्मयोगी

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु | ऋषि प्रसाद | ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक :** राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी